धरा और उदधि संस्कृतनिष्ठ शब्द हैं– इन्हें पृथ्वी तथा समुद्र समझें।

पृथ्वी तथा समुद्र के उपयोगी संसाधनों का अनुमान आप भी लगा सकते हैं किन्तु उन्हें ठीक से समझने में यह पुस्तक उपयोगी होगी।

पुस्तक में पृथ्वी की उत्पत्ति एवं उसकी आन्तरिक संरचना का सचित्र विवरण दिया गया है। फिर खनिज एवं ऊर्जा संसाधनों का (पृष्ठ 44–46) वर्णन है। इसी तरह सागरों की उत्पत्ति एवं प्राकृतिक संसाधन भी वर्णित हैं। सागर से सम्बद्ध महत्वपूर्ण घटनाएं मानसून, अलनिनो, चक्रवात हैं और इन सबसे जुड़ा मौसम है।

लेखक ने समुद्र विज्ञान से सम्बद्ध 5 संस्थानों का विस्तृत विवरण भी दिया है। ये हैं– राष्ट्रीय समुद्र प्रौद्योगिकी संस्थान, चेन्नई; भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केन्द्र, हैदराबाद; भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान, पुणे; राष्ट्रीय अंटार्कटिक एवं समुद्री अनुसंधान केन्द्र, गोवा तथा कोच्चि, नोएडा, चेन्नई एवं तिरुवनन्तपुरम स्थित तत्सम्बन्धी केन्द्र।

लेखक ने पुस्तक के अन्तिम 20 पृष्ठों में समुद्र से प्राप्त किए जाने वाले खनिज पदार्थों, बहुधात्विक पिण्डिकाओं, हाइड्रोकार्बन तथा पेट्रोलियम पदार्थ, गैस हाइड्रेट, सागर से प्राप्त नमक तथा औषधियों का सटीक वर्णन किया है। अन्त में 'जलवायु परिवर्तन– खतरे की घंटी' शीर्षक से जल तथा स्थल में हो रहे परिवर्तनों से जलवायु में जो परिवर्तन हो रहे हैं उनके प्रति पाठकों को सतर्क किया है।

पुस्तक में यथास्थान श्याम श्वेत चित्र भी दिए गए हैं। पुस्तक की छपाई अच्छी है– गेटअप भी सुन्दर है।

पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। लेखक तथा प्रकाशक दोनों साधुवाद के पात्र हैं।

– सम्पादक, विज्ञान

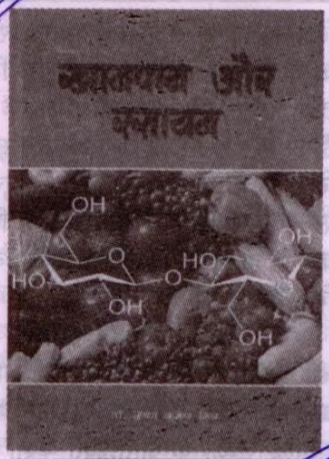

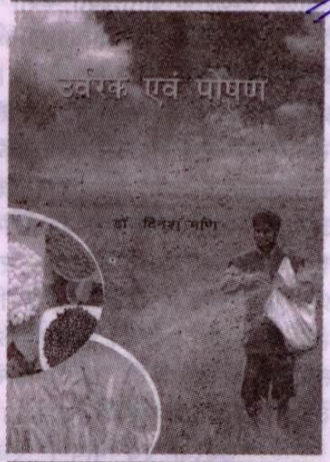

विज्ञान प्रसार, नोएडा द्वारा प्रकाशित नई पुस्तकें

1. खानपान और रसायनः डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र,
पृष्ठ संख्याः 150, मूल्य 150 रुपये
2. उर्वरक एवं पोषणः डॉ. दिनेश मणि,
पृष्ठ संख्याः 182, मूल्यः 120 रुपये
3. छोटे छोटे नवाचारों की विश्वव्यापी उपयोगिताः विज्ञानरत्न लक्ष्मण प्रसाद
पृष्ठ संख्याः 110, मूल्यः 130 रुपये

विज्ञान प्रसार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार के अन्तर्गत एक स्वायत्त संस्थान है जिसकी स्थापना देश में व्यापक रूप से विज्ञान लोकप्रिय कार्यक्रमों के निर्माण, समन्वय और प्रसार के उद्देश्य से किया गया था। इसका मुख्य कार्य लोकप्रिय विज्ञान विषयों पर सिद्धहस्त

विज्ञान लेखकों से पुस्तकें तैयार कराकर उन्हें प्रकाशित करना है। यह कार्य 1994 में शुरू किया गया और अब तक लगभग 250 लोकप्रिय पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जो हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की हैं, किन्तु हिन्दी को प्रमुखता प्राप्त है। पुस्तकों की विषयवस्तु एवं स्वरूप को ऐसा रखा गया है कि ये पुस्तकें स्कूल कालेज के विद्यार्थियों और आम पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध हों।

'खानपान और रसायन' पुस्तक के लेखक डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र रसायन विज्ञान के विशेषज्ञ और अनुभवी लेखक हैं। मनुष्य खानपान में रोटी, दाल, चावल, सब्जी के अतिरिक्त फलों का उपयोग करता है। इस पुस्तक में रसायन विज्ञान की दृष्टि से इन सभी अवयवों पर विचार किया गया है। विभिन्न अन्नों के अलावा फलों एवं सब्जियों, दूध तथा दुग्ध उत्पादों, मसालों, सब्जियों में आलू, यहां तक कि जल के विषय में विस्तार से चर्चा हुई है। स्वाद और जायका भी खानपान से जुड़ा विषय है जो लेखक की दृष्टि से छूट नहीं पाया। पुस्तक में यथास्थान रासायनिक सूत्र एवं आवश्यक चित्र भी दिए गए हैं जिससे पुस्तक की पठनीयता बढ़ गई है। पुस्तक के अन्त में उपयोगी साहित्य की सूची दी हुई है जिससे पाठक अधिक विस्तार से इस विषय को जान सकेंगे।

'उर्वरक एवं पोषण' एक मृदाविज्ञानी एवं सिद्धहस्त हिन्दी विज्ञान लेखक डॉ. दिनेश मणि द्वारा रचित है। इस पुस्तक में विभिन्न उर्वरकों तथा पोषण के विविध पहलुओं पर विस्तृत एवं रोचक सामग्री प्रस्तुत हुई है। पुस्तक कुल 11 अध्यायों में विभक्त है– विषय प्रवेश, पोषण सम्बन्धी ऐतिहासिकी, पोषण सम्बन्धी सिद्धान्त, पौधों के लिए आवश्यक तत्व, उर्वरकों के प्रकार, उर्वरक गुणवत्ता नियंत्रण, उर्वरक प्रयोग की विधियां, मृदा परीक्षण, उर्वरकजनित प्रदूषण, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन एवं उपसंहार।

पुस्तक में यथास्थान उर्वरकों के संगठन एवं मिट्टी के साथ उनके द्वारा होने वाली क्रियाओं, उर्वरक डालने की विधियों के वर्णन के साथ ही लेखक ने विभिन्न उर्वरकों के प्रयोग से उत्पन्न प्रदूषण पर भी विचार किया है। चूंकि उर्वरकों का प्रयोग मृदा में उनकी आवश्यकता के अनुसार किया जाता है अतः मृदा परीक्षण आवश्यक है। लेखक ने इस पर विशेष बल दिया है।

कुल मिलाकर यह पुस्तक छात्रोपयोगी होने के साथ साथ जागरूक कृषकों के लिए अत्यन्त सहायक सिद्ध हो सकती है।

'छोटे छोटे नवाचारों की विश्वव्यापी उपयोगिता' पुस्तक के लेखक हैं विज्ञानरत्न लक्ष्मण प्रसाद जी। वे नवाचार के विशेषज्ञ हैं और इन्होंने एतत्संबंधी कई पुस्तकें अंग्रेजी तथा हिन्दी में लिखी हैं।

इस पुस्तक में कुल 49 छोटे छोटे नवाचारों का सचित्र विवरण है। इन्हें 8 विभागों के अन्तर्गत वर्गीकृत किया गया हैं ये हैं खाद्य पदार्थ सम्बन्धी नवाचार, परिधान सम्बन्धी नवाचार, कार्यालय सम्बन्धी नवाचार, स्वास्थ्य सम्बन्धी नवाचार, मोटरकार सम्बन्धी नवाचार, मनोरंजन सम्बन्धी नवाचार तथा मिश्रित नवाचार। इनमें से कई नवाचार स्वयं लेखक की देन हैं अतः पाठक समझ सकते हैं कि विभिन्न नवाचारों को किस मौलिकता के साथ प्रस्तुत किया गया होगा।

पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता है प्रत्येक नवाचार के साथ रेखाचित्र की प्रस्तुति। ये सारे नवाचार भारत की देन नहीं हैं, ये विश्व भर के विभिन्न नवाचारियों की सूझ एवं श्रम के परिणाम हैं।

हमें विश्वास है कि प्रत्येक नवाचार को पढ़ने पर पाठक को लगेगा कि अरे! इसे तो हमें जानना चाहिए। अभी तक हम इनका उपयोग तो करते आ रहे हैं किन्तु इनमें निहित सिद्धान्तों एवं कौशल से अपरिचित रहे हैं।

निश्चय ही इस पुस्तक से छोटे–बड़ों का समान रूप से मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन हो सकेगा।

– डॉ0 शिवगोपाल मिश्र